मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 5

BHDC–103

बी. ए. (ऑनर्स) हिंदी

(बी. ए. एच. डी. एच.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2024

बी.एच.डी.सी.-103 : आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।* ***पहला*** *प्रश्न अनिवार्य है।*

---

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं **तीन** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 3×12=36

(क) मानुष हौं तौ वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।

जो पसु हौं तो कहा बसु मेरो चरौं नित नंद की धेनु
मँझारन।
पाहन हौं तो वही गिरि को जो धर्‌यौ कर छत्र
पुरंदर धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिल कालिंदी-कूल
कदम्ब की डारन॥

(ख) हरि जननी मैं बालक तेरा,

काहे न अवगुन बकसहु मेरा।

सुत अपराध करत है केते,

जननी के चित रहैं न तेते।

कर गहि केस करै जो घाता,

तऊ न हेत उतारै माता।

कहै कबीर इक बुद्धि विचारी,

बालक दुखी दुखी महतारी॥

(ग) काहे को रोकत मारग सूधौ ?

सुनहु मधुप ! निर्गुन-कंटक तें राजपंथ क्यौं रुंधो ?

कै तुम सिखै पठाए कुब्जा, कै कही स्यामधन जू धौं ?

वेद पुरान सुमृति सब ढूँढौं जुवतिन जोग कहूँ धौं ?

ताको कहा परेखौ कीजै, जानत छाँछन दूधौ।

सूर मूर अक्रूर गए लै ब्याज निबेरत ऊधौ॥

(घ) रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरे मोती मानस चून॥

जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग।

चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग॥

(ङ) पायो जी मैंने रामरतन धन पायो।

वस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु किरपा करि अपनायो।

जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सबै खोवायो।

खरचै नहिं कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो।

सत की नाव खेवाहिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो॥

2. अमीर खुसरो के काव्य में अभिव्यक्त लोकपक्ष की विविधता का सोदाहरण परिचय दीजिए। 16

3. निर्गुण के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कबीर की निर्गुण भक्ति पर प्रकाश डालिए। 16

4. जायसी की भक्ति में प्रेम के महत्व की विवेचना कीजिए। 16

5. सूरदास के वात्सल्य वर्णन की विशिष्टताओं पर प्रकाश डालिए। 16

6. "रहीम लोकजीवन के पारखी थे।" इस कथन की समीक्षा कीजिए। 16

7. मीराबाई की भक्ति की विशेषता बताते हुए उनके काव्य में निहित स्त्री चेतना के स्वर को उद्घाटित कीजिए। 16

8. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×8=16

(क) बिहारी की काव्यभाषा

(ख) घनानंद की प्रेमदृष्टि

(ग) रसखान का कृष्णप्रेम

(घ) नज़ीर की कविताओं में अभिव्यक्त लोकजीवन

× × × × × × ×